The Whispers
A Journal of Tribal Life, Literatures and Cultures
Published by Sanskruti Kendra, Sundargarh, Odisha, India
Volume I, Issue I, August 2024

DOI: 10.5281/zenodo.13736575

भाषा और मौखिक परंपराएं :
स्वदेशी ज्ञान को प्रसारित करने में मौखिक परंपराओं के महत्व और जनजातीय संस्कृतियों के संरक्षण

डॉ. तरकेलेंग कुल्लु
ट्राइबल रिसर्च सेन्टर
संत जेवियर्स कॉलेज, राँची

देशभर में ७०० आदिवासी समुदाय हैं। समुदाय कितनी जिंदा है, कितनी मर गई; क्या वो भाषाएं मर गई हैं? भाषा कभी मरती नहीं है, लुप्त होती थोड़ी समय, फिर पुर्नस्थापित होती है। जैसे हमारे पीढ़ियां बुजुर्ग लोग जो भाषा बोलते थे जिन्होंने इस शिक्षा पद्धति को नहीं अपनाया उन लोगों ने अपनी मातृभाषा सामुदायिक भाषा खड़िया, मुण्डा, हो, संताल, कुड़ुख भाषा बोलती है, इन लोगों ने अपनी चीजों को सहेजा और आगे बढ़ाया। उसी का परिणाम है कि आदिवासी भाषाएं लिखित न होते हुए भी जीवित हैं और अपने में समुदाय के विभिन्न आयामों को – संस्कृति, नन्दनी, इतिहास, कला, सामाजिक, रूढ़ि व्यवस्थाओं, परम्पराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया और आगे बढ़ाया। भाषा केवल अपनी बातों को कहने और समप्रेषण का माध्यम नहीं है बल्कि भंडार है, जिस भण्डार में समुदाय के ज्ञान, परम्पराओं का संरक्षण और संवर्द्धन है।[i]

भाषा की उत्पत्ति, भाषा के प्रकार में बात नहीं करुंगी, हम सभी जानते हैं कि भाषाओं के बनने का अपना इतिहास है, जिसे भाषाविदों ने लिखा और बताया है कि भाषा विज्ञानी इसके बारे लगातर शोध करते रहे हैं और नई नई चीजें जुड़ती रही हैं। भाषा की अभिव्यक्ति विभिन्न माध्यमों से होती है जिसमें प्रमुखता से हम मौखिकता को जानते समझते और बात करते हैं । मौखिकता को हम आदिवासी वाचिकता कहना ज्यादा पसंद करते हैं। भाषा जब वाचिकता में अभिव्यक्ति होती है तो उसके सम्प्रेषण का दायरा बढ़ जाती है, जिसमें व्यक्ति अपनी हाव भाव, परिवेश, बातचीत के आधार को अभिव्यक्त करता है। सिर्फ अपनी जुबान या अपनी भाव भंगिमा ही नहीं, बल्कि वो परिवेश और भाव भंगिमा और मौखिकता का गठजोड़ है। भाषा निश्चित तौर पे हमारे पुरखों के द्वारा दी गई अदभूत देन है जिसमें उन्होंने अपनी अनुभवों, ज्ञान को संजोया और हम तक पहूंचाया और ये काम भाषा के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी अभी तक होता आ रहा है, और इस ज्ञान को आगे बढ़ाने में भाषा ने महत्व भूमिका निभायी है। परिवार में बच्चों को भाषा के माध्यम से ही समुदाय, सामाजिक, परम्परागत ज्ञान एवं सांस्कृतिक परम्परागत ज्ञान के बारे में जानकारी हुई। यह जानकारी भाषा के माध्यम से ही सम्प्रेषित हुई। भाषा में ही गाना, कहानी, मंत्र के माध्यम से अपना सामुदायकि, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक रीति रिवाजों को जाना, जीवन जीने की कला को भी समझा।

वर्तमान समय में मातृभाषाओं पर वाह्य भाषाओं के हावी होने के कारण भाषाएं अपभ्रंशित हो रहे हैं। और यही वजह है कि लोग अपनी मातृभाषाओं को छोड़कर बाहरी भाषाओं की ओर खींच रहे हैं, जबकि हकीकत यह है, आपको अपनी मातृभाषाओं के माध्यम से जो ज्ञान परम्परा हासिल हुई वह दूसरी भाषाओं को सीखने में मददगार साबित होती है। मातृभाषा आपको मजबूती देती है। चूंकि भाषाओं को खत्म करने की साजिश हो रही है, जिससे कि एक पूरी संस्कृति पूरा इतिहास, धार्मिक, सामाजिक परम्पराएं साहित्यिक सांस्कृतिक चीजें खत्म हो जाएं और लोग सिर्फ एक ही संस्कृति और एक ही धर्मवाले हो जाएं। क्योंकि आदिवासी भाषाओं में ही सारी चीजें संजोयी गई हैं। वो खत्म हो जाएंगी तो जो ज्ञान परम्पराता खत्म होगा ही, साथ ही खत्म हो जाएगी भाषा।

यह सिर्फ आदिवासी भाषाओं के साथ ही नहीं बल्कि सभी भाषाओं के साथ है। कल्पना कीजिए सारे रंग खत्म हो जाए और एक ही रंग बच जाए, तो कैसा लगेगा ? लिखित होना आज के संदर्भ में जरुरी इसलिए है क्योंकि भाषाओं पर खतरे तो मंडरा रहे हैं, युवा पीढ़ी नहीं बोल रही है और भाषा जाननेवाले धीरे घीरे सिमट रहे हैं या खत्म हो रहे हैं। ऐसे में मौखिकता या वाचिकता को बचाए रखने के लिए लेखक जरुरी है। साथ ही जरूरी है आधुनिक तकनीकों का भाषाओं के संरक्षण में उपयोग।

भाषाओं को बोले जाने के लिए और भाषाओं में लिखे जाने को प्रोत्साहन देने की जरुरत है। स्वास्थ्य संबन्धी परम्परागत ज्ञान को विदेशी पादरी पी.ओ.बोडिङ ने संजोने का काम किया है। यह संताली भाषा में है जिसके तीन भोल्यूम हैं – जिसका नाम है Studies in Santal Medicine and connected Folklore[ii]। नेचरोपैथी का इस किताब में पृष्ठ संख्या १६३ से ३११ में विस्तार से दिया गया है आज के समय में लोग कैसे एलोपैथी छोड़कर नेचरोपैथी की ओर जा रहे हैं । उन्हें पता हो गया है कि एलोपैथी जो है एक बीमारी को ठीक तो करता है मगर दूसरी बीमारी को पैदा भी करता है। प्रकृति को जानने समझने और उसके संरक्षण के लिए उस संबंधित जीवन शैली कैसी हो, इसके लिए पुरखों ने अपनी अपनी भाषाओं में गीतों और कहानियों के माध्यम से बताया है। समस्या है तो समस्या का निदान भी बताया है। जरुरत है भाषाओं में निहित ज्ञान परम्परा को खोजना और अपनाना। जैसे – सेंदरा का नियम कहीं लिखित नहीं है। सेंदरा करेंगे तो एक मजबूत जानवर को मारेंगे, उनका शिकार करेंगे। यह कहीं लिखा हुआ नहीं है। प्रकृति के साथ रहना है तो कुवार महीना बीतने के बाद पेड़ काटती है तो घुन नहीं होती है, पहले का लकड़ी काटने से घुन लगती है।

जब तक हम भाषा को नहीं बचाएंगे, भाषा नहीं बोलेंगे, तो भाषा कैसे बचेगी ? लिखित फॉर्म कैसे मिलेगा ? इसलिए जरुरी है भाषा का बोलना और लिखना। लिखित रुप में सही उच्चारित किये जाने लायक कोई भी लिपि नहीं है, खासकर आदिबासी भाषाओं के संदर्भ में। लिपि बना रहे हैं, काम चला रहे हैं। तकनीकी चीजें विकल्प हैं, लेकिन ये तभी मददगार है जब मूल रुप से चीजें मौजूद हों। ये भाषा में ही संरक्षित हो सकती है। भाषा बोली जाएगी तभी ज्ञान परम्परागत पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित होगा। जब तक भाषा है तब सांस्कृतिक परम्परा है। भाषा के नहीं रहने पर भी रहेंगे किन्तु मूल रूप खत्म हो जाएगा।

बुद्धिमानों ने कहा है कि दुनियां में जितनी भी भाषाएं हैं उनका जो भी है मौखिक परम्परा ही रहा है। सबसे पहले, स्वदेशी ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से ही संचार होता रहा है। हमारे पूर्वजों के द्वारा जो मौखिक रूप में हमारी साहित्य रही, उसको तरीके से लिखित रूप क्रमबद्ध सजाया गया है। जितनी भी भाषाओं की बोली है उसको गीत के रूप में ही लिखना शुरु किया। उसके बाद उसका वर्णन किया गया है, क्योंकि हम आदिवासियों की पहला परम्परा रहा है।

[i] व्यक्तिगत साक्षातकार – बन्दना टेटे, सचिव, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची।

[ii] Studies in Santal Medicine and connected Folklore, Rev. P.O. Bodding, Volume 1 to 3